JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारत श्रीलंका संबंध: विगत आर्थिक संबंधों के उतार-चढ़ाव के परिपेक्ष में

डॉ. कृष्णा राय चौहान
सहायक प्राध्यापक
गवर्नमेंट कॉलेज डोलरिया, नर्मदापुरम

शोध सारंशिका :समय के साथ दोनों देशों के बीच परिपक्व और विविधता पूर्ण होते गए। दोनों देशों की साझा सांस्कृतिक और सामाजिक विरासत और अपने लोगों से बातचीत करने वाले लोगों को एक बहुआयामी साझेदारी बनाने की नई प्रदान करता है। हल्के वर्षों में रिश्तों को निम्नलिखित आयामों पर चिन्हित किया गया है_

- उच्चतम राजनीतिक राजनीतिक स्तर पर निकट संपर्क
- बढ़ता व्यापार और निवेश
- सहयोग के क्षेत्र में विकास शिक्षा संस्कृति रक्षा
- अंतरराष्ट्रीय हित के प्रमुख मुद्दों पर व्यापक समझ।

दोनों देशों के द्वारा आपसी संबंधों को पुनः एक नए विज़न में परिभाषित करने का प्रयास किया जा रहा है जिसमें पर्यटन, ऊर्जा, व्यापार, उच्च शिक्षा और इसके डेवलपमेंट में दोनों ही देश आपसी सहयोग को बढ़ाएंगे साथ ही दोनों देशों ने इस मिशन के जरिए लोगों के बीच सामुद्रिक, ऊर्जा और पीपल्स तो पीपल्स कनेक्टिविटी को मजबूत करने का फैसला किया है।

शब्द कोष: SAARC, BIMSTEC, सामरिक, भू राजनीतिक सामरिक, मुक्त व्यापार समझौते, 13 वें संशोधन, राजनीति व्यवस्थाओं, लोकतांत्रिक परिवर्तन

शोध पत्र:

हिंद महासागरीय क्षेत्र के दक्षिण एशिया में स्थित भारत और श्रीलंका दो ऐसे भौगोलिक निकटता रखने वाले देश हैं, जिनकी 2500 वर्ष पुरानी सांस्कृतिक, धार्मिक, ऐतिहासिक संबंध सदैव ही परिलक्षित होते रहे हैं। ब्रिटिश कालीन उपनिवेशवादी त्रासदी को

झेलने के बाद दोनों देशों ने एक वर्ष के अंतराल पर स्वतंत्रता प्राप्त की। अपने- अपने देश की राजनीतिक व्यवस्था के संचालन हेतु दोनों ही राष्ट्रों ने लोकतांत्रिक ताने बाने में बनी हुई संसदीय और अध्यक्षात्मक शासन व्यवस्था को अपने सामाजिक परिवेश के अनुसार स्वीकार किया। भारतीय तमिलों को श्रीलंका के बगानों में काम करने हेतु जबरन अंग्रेजों द्वारा स्थानांतरित किया गया। जिसके परिणामस्वरुप यहां जातिय विविधता व समागम ने जातीय संघर्षों को हवा दी। तमिल समस्या भारत और श्रीलंका के बीच संबंधों को प्रभावित करने वाला एक प्रमुख मुद्दा बनकर रह गया।

समय के साथ दोनों देशों के बीच परिपक्व और विविधता पूर्ण होते गए। दोनों देशों की साझा सांस्कृतिक और सामाजिक विरासत और अपने लोगों से बातचीत करने वाले लोगों को एक बहुआयामी साझेदारी बनाने की नई प्रदान करता है। हल्के वर्षों में रिश्तों को निम्नलिखित आयामों पर चिन्हित किया गया है-

- उच्चतम राजनीतिक राजनीतिक स्तर पर निकट संपर्क
- बढ़ता व्यापार और निवेश
- सहयोग के क्षेत्र में विकास शिक्षा संस्कृति रक्षा और अंतरराष्ट्रीय हित के प्रमुख मुद्दों पर व्यापक समझ।

भारत और श्रीलंका के बीच कूटनीतिक संबंध के 75 वर्ष पूर्ण होने एवं तमिल समुदाय के श्रीलंका के समाज में अभिगमित होने के 200 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में श्रीलंका के राष्ट्रपति रानिल विक्रम सिंघम की दो दिवसीय भारत की यात्रा हुई। निश्चित रूप से, जिसका लक्ष्य भारत की ओर से श्रीलंका की आर्थिक समस्या से उबरने में मदद के साथ-साथ चीन के बढ़ते प्रभाव को संयमित और संतुलित करना था। इस द्वीपीय देश का महत्व सिर्फ भारत के लिए ही नहीं, वरन भारत का निकट संपर्क होने के कारण चीन के लिए भी सामरिक और भू राजनीतिक दृष्टि से अत्यंत ही महत्वपूर्ण है। सार्क संगठन का सदस्य होने के नाते भी, श्रीलंका की शांति एवं आंतरिक राजनीतिक व्यवस्था का सुगमता से संचालन भारत के और दक्षिण एशियाई उपमहाद्वीप के विकास के लिए बहुत ही आवश्यक है।

दोनों देशों के द्वारा आपसी संबंधों को पुनः एक नए विज़न में परिभाषित करने का प्रयास किया जा रहा है जिसमें पर्यटन, ऊर्जा, व्यापार, उच्च शिक्षा और इसके डेवलपमेंट में दोनों ही देश आपसी सहयोग को बढ़ाएंगे साथ ही दोनों देशों ने इस मिशन के जरिए लोगों के बीच सामुद्रिक, ऊर्जा और पीपल्स तो पीपल्स कनेक्टिविटी को मजबूत करने का फैसला किया है।

ब्रिटेन और अमेरिका के बाद भारत श्रीलंका का तीसरा सबसे बड़ा निर्यात गंतव्य है। श्रीलंका अपने 60% से ज्यादा निर्यात हेतु **भारत श्रीलंका मुक्त व्यापार समझौते** का लाभ उठाता है। भारत श्रीलंका में एक प्रमुख निवेशक भी है। 2005 से 2019 तक भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश लगभग 1.7 बिलियन अमेरिकी डॉलर रहा है। श्रीलंका बहु क्षेत्रीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग के लिए बंगाल की खाड़ी **बिम्सटेक** तथा **सार्क** जैसे समूह का भी सदस्य है, जिसमें भारत अग्रणी भूमिका निभाता है। अपनी **नेबरहुड फर्स्ट पॉलिसी** और **सागर में सभी के लिए सुरक्षा और विकास सिद्धांत** के अनुसार भारत हिंद महासागर क्षेत्र को शांतिपूर्ण और सुरक्षित रखने के लिए श्रीलंका को बहुत महत्व देता है। श्रीलंका लंबे समय से भारत से प्रत्यक्ष निवेश के लिए एक प्राथमिक गंतव्य रहा है। श्रीलंका **सार्क** (दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन) में भारत के सबसे बड़े व्यापारिक साझेदारों में से एक है।

मार्च 2000 में भारत श्रीलंका मुक्त व्यापार समझौते के लागू होने के बाद दोनों देशों के बीच व्यापार विशेष रूप से तेजी से बड़ा। श्रीलंका सीमा शुल्क के अनुसार 2018 में द्विपक्षीय व्यापार 4.93 बिलियन अमेरिकन डॉलर रहा।

श्रीलंकाईकर्मियों को भारत के द्वारा प्रशिक्षित किया जाता रहा है। भारतीय सेना और श्रीलंका सेना के बीच संयुक्त सैन्य प्रशिक्षण अभ्यास 1 से 14 दिसंबर 2019 तक पुणे में विदेशी प्रशिक्षण नोड में आयोजित किया गया था। भारतीय सेना और श्रीलंका सेना के बीच इस सैन्य प्रशिक्षण अभ्यास को **मित्र शक्ति** के नाम से जाना जाता है। मित्र शक्ति 2019 भारतीय और श्रीलंका सेवा के बीच संयुक्त सैन्य प्रशिक्षण का सातवां संस्करण था।

परिचालन अनुभव और सर्वोत्तम प्रथाओं के पारस्परिक आदान-प्रदान के माध्यम से भारत और श्रीलंका दोनों के सैनिकों की अंतरसंचालनीयता और एकजुट परिचालन क्षमता के वांछित स्तर को प्राप्त करने पर ध्यान केंद्रित किया गया था।

श्रीलंका की महत्त्वपूर्ण होती स्थित

हिंद महासागर क्षेत्र में श्रीलंका की स्थिति न केवल उसको व्यापारिक रूप से बल्कि भारत के परिपेक्ष में सामरिक रूप से भी महत्वपूर्ण सिद्ध करती है। श्रीलंका की इस भौगोलिक स्थिति का भारत के साथ संबंधों पर गहरा असर पड़ता है और यही कारण है कि भारत यहां के राजनीतिक जीवन में किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं चाहता है, परंतु वहां पर शांतिपूर्ण लोकतांत्रिक विकास तथा संप्रभुता का पूर्ण सम्मान करते हुए की अंतरराष्ट्रीय कोशिशें को स्वीकार करता है।चीन ने श्रीलंका के साथ अपने संबंधों को बेहतर बनाकर, भारत को कहीं पीछे छोड़ दिया है, लेकिन श्रीलंका के आर्थिक संकट और राजनीतिक संकट ने भारत के साथ उसके कूटनीतिक संबंधों को नया जीवन दे दिया है। श्रीलंका के आर्थिक संकट के दौरान भारत के द्वारा अपने मित्र पड़ोसी राज्य को दिल खोलकर आर्थिक सहायता न केवल प्रदान की गई बल्कि इस स्थिति से उबरने का भी हौसला प्रदान किया गया।

1948 में ब्रिटेन से आज़ादी के बाद यह श्रीलंका का सबसे गंभीर आर्थिक संकट माना जा रहा है। रोज़मर्रा की ज़रूरत के सामानों के दाम आसमान पर हैं, खाने-पीने के सामान का संकट और ईंधन भी आसानी से नहीं मिल रहा है, इन सबके चलते श्रीलंका के आम लोग सड़कों पर उतर कर प्रदर्शन कर रहे हैं।

श्रीलंका के प्रधानमंत्री बने रानिल विक्रमसिंघे ने कहा है कि स्थिति बेहतर होने से पहले और ज़्यादा ख़राब होंगी। उन्होंने भारत सहित दुनिया के दूसरे देशों से वित्तीय मदद भी मांगी है।

भारत का सहयोगात्मक रवैया:

भारत श्रीलंका को बहुत ज़्यादा आर्थिक सहायता देने वाला देश नहीं रहा है, वहीं दूसरी ओर 2019 के अंत तक श्रीलंका के कुल विदेशी कर्ज़े का 10 प्रतिशत से ज़्यादा हिस्सा अकेले चीन का था। 2021 की शुरुआत में आर्थिक संकट गहराने पर श्रीलंकाई सरकार ने विदेशी मुद्रा की कमी से निपटने के लिए चीन के साथ 148 मिलियन डॉलर के मुद्रा बदलने की सुविधा हासिल की थी।

लेकिन इन दिनों श्रीलंका की सबसे ज़्यादा मदद करने वाले देश के तौर पर भारत उभरा है। श्रीलंका पर करीब 51 बिलियन डॉलर का विदेशी कर्ज़ है। इस साल इस कर्ज़े के लिए उन्हें कम से 7 अरब डॉलर का भुगतान करन होगा और यही रकम आने वाले कुछ सालों में उन्हें हर साल चुकानी है।

रोज़मर्रा की ज़रूरत में शामिल पेट्रोलियम ईंधन मंगाने के लिए श्रीलंका को तत्काल तीन अरब डॉलर की ज़रूरत है। वर्ल्ड बैंक के द्वारा श्रीलंका को 60 करोड़ डॉलर लोन देने पर सहमति जताई है, जबकि भारत ने 1.9 अरब डॉलर की मदद देने का वादा किया है और माना जा रहा है कि 1.5 अरब डॉलर की अतिरिक्त मदद भी करेगा। भारत अपने पड़ोसी की शांतिपूर्ण विकास को समर्थक है।

इसके अलावा भारत सरकार ने श्रीलंका को 65 हज़ार टन खाद और चार लाख टन ईंधन भेजा है, इसके अलावा और भी ईंधन भेजे जाने की संभावना है। साथ में श्रीलंका को मेडिकल सहायता भेजने का भी भारत ने भरोसा दिलाया है।

इसके बदले में भारत ने श्रीलंका के त्रिनकोमली तेल क्षेत्र तक इंडियन ऑयल कारपोरेशन की पहुंच को सुनिश्चित करने वाला समझौता किया है। त्रिकोंमाली के पास भारत 100 मिलियन वॉट उत्पादन क्षमता वाले पावर प्लांट विकसित करने की योजना बना रहा है।

श्रीलंका में भारत की मदद का असर

दरअसल भारत की मदद को श्रीलंका और चीन के आपसी संबंधों के चलते संदेह से देखा जा रहा है। 2005 में महिंदा राजपक्षे के श्रीलंकाई प्रधानमंत्री बनने के बाद श्रीलंका का झुकाव चीन की तरफ़ बढ़ा और घरेलू आर्थिक विकास के लिए उन्हें चीन कहीं ज़्यादा विश्वसनीय साझेदार लगा।

इसके बाद से ही श्रीलंका की अधिकांश विकास योजनाओं का कांट्रैक्ट चीन को मिला, जिसमें सैकड़ों बिलियन डॉलर की लागत वाले हंबनटोटा पोर्ट और कोलंबो गाले एक्सप्रेस वे शामिल हैं । 2014 में चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने कोलंबो का दौरा किया और इसे तब भारत के लिए स्पष्ट कूटनीतिक संकेत माना गया था।

भारत की कोशिशों की वजह

- श्रीलंका में चीन के प्रभाव को कम करने के लिए भारत पूरी कोशिश कर रहा है। शी जिनपिंग के श्रीलंका दौरे के बाद अगले ही साल भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ना केवल श्रीलंका का दौरा किया बल्कि श्रीलंकाई संसद में बोलते हुए दावा किया कि भारत और श्रीलंका आपस में सबसे अच्छे दोस्त हैं।

- दोनों पक्षों ने द्विपक्षीय पर्यटन को बढ़ावा देने और मौजूदा योजनाओं को लोगों के बीच आपसी संपर्क को बढ़ावा देकर और श्रीलंका की घरेलू अर्थव्यवस्था में सुधार लाने में मदद कर और भी विस्तृत करने का वादा किया है।
- दोनों पक्षों ने 'श्रीलंका में विभिन्न क्षेत्रों में राज्य के स्वामित्व वाले उद्यमों के विनिवेश और विनिर्माण/आर्थिक क्षेत्रों में भारत से निवेश को सुविधाजनक बनाने' की योजना बनाई है। उन्होंने यह भी सुनिश्चित किया है कि कैसे 'दोनों देशों के बीच व्यापार को निपटाने के लिए भारतीय रुपये को प्रमुख मुद्रा के रूप में नामित किए जाने का निर्णय, एक मज़बूत और

पारस्परिक रूप से लाभकारी वाणिज्यिक संबंध की शुरुआत करेगी' और 'व्यवसायों और आम लोगों के बीच व्यापार और लेनदेन को और बढ़ाने के लिए यूपीआई-आधारित डिजिटल भुगतान को संचालित करने' पर भी सहमति व्यक्त की गई।

- ऐसे संकेत हैं कि शीघ्र ही दोनों पक्ष, बहु-उत्पाद पाइपलाइन परियोजनाओं पर तकनीक़ी वार्ता शुरू करने वाले है. नेपाल (2019) और बांग्लादेश (2023) के बाद श्रीलंका तीसरा पड़ोसी देश है जिसके साथ भारत पेट्रोलियम उत्पादों और पावर ग्रिड दोनों में 'ऊर्जा संपर्क' का निर्माण कर रहा है।
- संयुक्त बयान में 'रामेश्वरम और तलाईमन्नार के बीच नौका सेवाओं को फिर से शुरू करने की दिशा में काम करने' का भी वादा किया गया, जिसके बंदरगाह का बुनियादी ढांचा 60 के दशक की शुरुआत में एक चक्रवात से नष्ट हो गया था।

भारत-श्रीलंका संबंधों में चुनौतियाँ:

मत्स्य पालन विवाद: भारत और श्रीलंका के बीच लंबे समय से चले आ रहे मुद्दों में से एक पाक जलडमरूमध्य तथा मन्नार की खाड़ी में मछली पकड़ने के अधिकार से संबंधित है। भारतीय मछुआरों को अक्सर समुद्री सीमा पार करने एवं श्रीलंकाई जल में अवैध मछली पकड़ने के आरोप में श्रीलंकाई अधिकारियों द्वारा गिरफ्तार किया जाता है।

इससे तनाव पैदा हो गया है और कभी-कभी दोनों देशों के मछुआरों के साथ घटनाएँ भी होती रहती हैं।

सीमा सुरक्षा और तस्करी: भारत तथा श्रीलंका के बीच सुभेद्य समुद्री सीमा (Porous Maritime Boundary) सीमा सुरक्षा एवं नशीले पदार्थों और अवैध आप्रवासियों सहित सामानों की तस्करी के मामले में चिंता का विषय रही है।

तमिल जातीय मुद्दा: श्रीलंका में जातीय संघर्ष, विशेष रूप से तमिल अल्पसंख्यकों से जुड़ा, भारत-श्रीलंका संबंधों में एक संवेदनशील विषय रहा है। भारत ऐतिहासिक रूप से श्रीलंका में तमिल समुदाय के कल्याण और अधिकारों के बारे में चिंतित रहा है।

चीन का प्रभाव: भारत ने श्रीलंका पर चीन के बढ़ते आर्थिक और रणनीतिक प्रभाव के बारे में चिंता व्यक्त की है, जिसमें बुनियादी ढाँचा परियोजनाओं तथा हंबनटोटा बंदरगाह के विकास में चीनी निवेश शामिल है। इसे कभी-कभी क्षेत्र में भारत के अपने हितों के लिये एक चुनौती के रूप में देखा जाता है।

आगे की राह:

- **आर्थिक सहयोग बढ़ाना:** दोनों देश व्यापार असंतुलन को कम करने और अधिक आर्थिक सहयोग को बढ़ावा देने की दिशा में काम कर सकते हैं। पूरक हितों वाले क्षेत्रों की पहचान करने तथा निवेश को बढ़ावा देने से पारस्परिक रूप से लाभप्रद परिणाम प्राप्त हो सकते हैं।
- **बाहरी संबंधों को संतुलित करना:** जबकि अन्य देशों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध बनाए रखना आवश्यक है, भारत और श्रीलंका दोनों को यह सुनिश्चित करना चाहिये कि उनके द्विपक्षीय संबंध मज़बूत रहें तथा बाहरी शक्तियों से अनावश्यक रूप से प्रभावित न हों।

- **सुरक्षा सहयोग को सुदृढ़ बनाना:** सुरक्षा मामलों पर सहयोग और खुफिया जानकारी साझा करने से आम खतरों से निपटने तथा दोनों देशों के बीच विश्वास को मज़बूत करने में मदद मिल सकती है।
- **तमिल जातीय मुद्दे को संबोधित करना:** तमिल समुदाय के कल्याण और अधिकारों का सम्मान तथा सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिये भारत श्रीलंका के साथ जुड़ाव जारी रख सकता है। श्रीलंका में स्थिरता एवं समावेशिता को बढ़ावा देने के लिये जातीय सुलह व सत्ता के हस्तांतरण के प्रयासों का समर्थन करना महत्त्वपूर्ण हो सकता है।
- **लोगों के बीच कनेक्टिविटी:** सांस्कृतिक आदान-प्रदान, पर्यटन और शैक्षिक संबंधों को प्रोत्साहित करने से दोनों देशों के नागरिकों के बीच संपर्क तथा समझ को बढ़ावा मिल सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. **h**https://www.mea.gov.in https
2. https.//www.vajiramandravi.com.indiasrilan
3. **https.//**www.icwa.in**.**
4.